स्वामी विवेकानंद धार्मिक सहिष्णुता की भूमि भारत

प्रो0 मन्जु
(राजकीय महाविद्यालय छछरौली)

मुझे ऐसे देश का वासी होने का गर्व व गौरव
है जिसने की विश्व की पीड़ित शरणागत और
बहिष्कृत जातियों को हिन्दू धर्म से अलग धर्मों
का मतावलम्बी होने के बाद भी आश्रय दिया।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार - धर्म का अर्थ है, उस ब्रह्मत्व की अभिव्यक्ति, जो अब मनुष्यों में पहले ही से विद्यमान है। शास्त्र-ग्रंथों में धर्म नहीं होता, अथवा सिद्धान्तों, मतवादों, चर्चाओं तथा तार्किक उक्तियों में भी धर्म प्राप्ति नहीं होती, धर्म तो साक्षात्कार करने की वस्तु है। धर्म का मतलब तीर्थ यात्रा नहीं है, अनगिनत देवताओं का पूजन नही है, धर्म अर्थात कर्मकाण्ड भी नहीं है, बल्कि भूखे को अन्न देना, यह धर्म है। उसमें अन्ननिर्मित की क्षमता विकसित करना, उसे शिक्षा देना, शिक्षा देकर उसे विचार प्रवृत बनाना, उसे सक्षम बनाना और सक्षम बनाकर सामर्थ्यवान बनाना ही धर्म है। जो धर्म पोथी पुराण, वेदावाङ्मय और प्रवचन में कैद हो गया था उसे स्वामी विवेकानंद ने लोकव्यवहार मे लाया। सामान्य जनता तक धर्म कैसे पहुंचना चाहिए इसकी सीख दी। गरीबों में ईश्वर देखिए और दरिद्री नारायण की सेवा कीजिए। यह सेवा "शिव भाव से जीव सेवा" इस भावना से कीजिए । सामान्य जनता की सेवा, गरीब जनता की सेवा और उसका उत्थान यही सर्वश्रेष्ठ धर्म है और इसी धर्म का हमें आचरण करना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता की भूमि भारत

स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि हमारा देश अध्यात्मवाद नैतिकता और दर्शनशास्त्र की जन्मभूमि है। यहां के कण-कण में प्रेम, माधुर्य तथा विनम्रता का वास है। भारत भूमि सदैव इन क्षेत्रों में विश्व भर में अग्रणी रही है और आज भी वैसी ही है। यह वही प्राचीन भूमि है, जहां बड़े से बड़ा सम्राट भी अपने को किसी प्राचीन ऋषि का वंशज कहने में गौरव का अनुभव करता है। यह वही भूमि है जहां से उमड़ती हुई बाढ़ की तरह धर्म व दर्शन की लहरों ने समग्र संसार को बार-बार प्लावित किया। आत्मा का अमरत्व, अन्तर्यामी ईश्वर एवं जगत्प्रपंच तथा मनुष्यों के भीतर सर्वव्यापी परमात्मा विषयक विभिन्न मतों का सबसे पहले यहीं उदभव हुआ था और यहीं धर्म व दर्शन के आदर्शों ने अपनी चरम उन्नति प्राप्त की थी। यह वही भारत है, जो शताब्दियों के आघात, विदेशियों के शत-शत आक्रमण, और सैंकड़ों आचार व्यवहारों को विपर्यथ सहकर भी अक्षय बना हुआ है। अपने अविनाशी वीर्य और जीवन के साथ अब तक पर्वत से भी दृढ़तर भाव से खड़ा है।

स्वामी विवेकानन्द कहते हैं कि हममें केवल सहिष्णुता ही नहीं, अपितु हम हिन्दू सभी धर्मों को अपनाते भी आये हैं। उसे मुस्लमानों की मस्जिद में प्रार्थना करने पर, पारसियों की अग्नि शिखा की पूजा में या फिर ईसाईयों की सूली के सम्मुख नतमस्तक होने पर भी कोई विरोध नहीं है। उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान है कि प्रत्येक धर्म अपनी अपनी परिस्थितियों और विकास के अनुरूप, निरंतर उस परम पिता परमेश्वर की खोज में लगा है। हमने इन्हीं सब पुष्पों को एक प्रेम के सूत्र में बाँधकर एक अनूठे गुलदस्ते का रूप दिया है।

हमारा धर्म क्यों अन्य धर्मों से श्रेष्ठ है वे कहते हैं कि भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहां धर्म के नाम पर आक्रमण या रक्तपात नहीं किया गया वरन् हमारे धर्म के मुख से सदैव आशीर्वाद, शांति, करुणा और प्रेम के शब्द ही प्रस्फुटित हुए हैं। हमने किसी को अपना धर्म मानने से नहीं रोका। आस्तिक हो या नास्तिक, द्वैतवादी हो या अद्वैतवादी तथा वशिष्टाद्वैतवादी, सभी के लिए यहां समान स्थान है। मात्र यहां और केवल यहां ही सबसे पहले सहिष्णुता के आदर्श को मुखरित तथा व्यावहारिकता में परिणित किया गया।

हम हिन्दुओं के इस सहिष्णु और दयालं भाव ने भी इन सभी यहूदियों को तब शरण दी थी जब वे अपने देश से निष्कासित किये गये थे; इसी का परिणाम है कि आज भी वे मालाबार में बसे हुए हैं। इस देश में वे ईसाई भी हैं जो ईसा के शिष्य संत थॉमस के साथ भारत आए थे। इन्हें भी भारतवासियों ने बसने की तथा अपने मतों और विचारों का पालन करने की अनुमति प्रदान की । इन ईसाईयों की बस्तियां आज भी भारत में विद्यमान है। इस प्रकार हमने बचे-खुचे पारसियों को शरण दे कर उनकी जाति को पूर्ण विनाश से बचाया। यह पारसी समुदाय आज भी हम सब का प्रेम पात्र बन मुम्बई नगर में छाया हुआ है। यही सहिष्णुता की भावना आज भी हमारे हृदयों में पल्लवित हैं, जिसका न कभी नाश हुआ और न कभी होगा।

केवल भारत ही सहनशीलता, अध्यात्मवाद तथा धार्मिक सहिष्णुता की गौरव भूमि बना हुआ है । यहां और केवल यहां ही वे मतानुयायी भी अपने मस्जिद व गिरिजाघर बना पाते हैं जो हमारे ही धर्म को नकारने व नीचा दिखाने के उद्देश्य से इस देश में आते हैं यह केवल भारत में ही है जहां मुस्लमानो तथा ईसाईयों के लिए भी भारतीय देवालय निर्मित करते हैं, अन्यत्र ऐसा कहीं नहीं है। यदि तुम अन्य इस्लामी देशों में जाकर मुस्लमानों व अन्य धर्म के लोगों से मन्दिर निर्माण की सहायता मांगोगे, तो देखो वह तुम्हारी सहायता कैसे करते हैं। सहायता तो छोड़ो वह तुम्हारे मंदिर को ही तोड़ देंगें। और संभवतः तुम्हारे सिर को भी।

हमारे देश में सभी धर्मों को अपना अपना प्रचार करने तथा अनुयायी बनने की स्वतंत्रता है। स्वामी विवेकानंद का कथन है कि भारत में सदा से ही धार्मिक स्वतंत्रता की अदभुत धारणा रही हैं, और तुम्हें स्मरण रखना चाहिये ये स्वतंत्रता विकास की प्रथम आवश्यकता है।

हम हिन्दुओं की जीवन शक्ति जीवन तत्व और आत्मा ही धर्म में निहित है। प्राच्य और पाश्चात्य राष्ट्रों में घूमकर मुझे दुनिया का कुछ अनुभव प्राप्त हुआ है और मैंनें सर्वत्र सब देशों का कोई न कोई ऐसा आदर्श देखा है जिसे उस देश का मेरूदंड कह सकते हैं। वहीं राजनीति कहीं समाज-संस्कृति, कही मानसिक उन्नति और इसी प्रकार कुछ-न-कुछ प्रत्येक के मेरूदंड का काम करता है। परन्तु हमारी मातृभूमि भारत वर्ष का मेरूदंड धर्म केवल

धर्म ही है। धर्म के आधार पर ही उसी की नींव पर हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रासाद खड़ा है। हमारे लिए तो आध्यात्मवाद ही हमारा सर्वोच्च आदर्श है। इसी क्षेत्र के व्यक्तियों पर हमारा विश्वास टिका है।

भारत की महानता का विशेष कारण है कि हम कभी आक्रांता नहीं रहे। भारत की प्राणशक्ति-'धर्म' अभी भी आक्रांत नहीं रही है। भारत वासियों ने उनका त्याग नहीं किया है और अंधविश्वासों के बावजूद वह आज भी सफल है। यहां भयानक अंधविश्वास है और उसमें से कुछ तो अत्संत जघन्य तथा घृणास्पद है परन्तु उसकी चिंता मत करो क्यों कि हमारी राष्ट्रीय जीवन धारा हमारा राष्ट्रीय ध्येय अभी भी जीवित है। भारत, मृत्यु की भांति दृढ़ता पूर्वक ईश्वर से चिपका हुआ है, इसलिए उसके लिए अभी भी आशा है।

स्वामी जी ने धर्म महासभा के अंतिम दिन विदाई भाषण में बेंबाक होकर कहा- ईसाई को हिन्दू या बौद्ध नहीं होना है और न ही हिन्दू या बौद्ध को ईसाई बनना है । साधुता पवित्रता और दयाशीलता किसी सम्प्रदाय विशेष की बपौती नहीं है। तथा प्रत्येक धर्म में ही अति उन्नत चरित्र के नर-नारियों का जन्म हुआ है-यदि कोई ऐसा स्वप्न देखे कि केवल उसी का धर्म टिका रहेगा और अन्य सारे धर्म लुप्त हो जाएंगें तो वे वस्तुतः दया का पात्र है और उसे सपष्ट बता देता हूँ कि शीघ्र ही सारे प्रतिरोधों के बावजूद प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा होगा- सहयोगन की विरोध, परभावग्रहण, न की परभाव विनाश, समन्व्य न की मतभेद और कलह"

स्वामी जी के शिकागो संदेश की प्रासंगकिता आज भी अक्षुण्ण है। आज भी विश्व के विचारक शांति, समानता, सहिष्णुता को आध्यात्मिक दृष्टि से देखने लगे हैं। सत्य तो यह है कि ऐसा विचार भारत ही दे सकता है। आज भी विश्व पारस्परिक टकराव, आतंकवाद, भौतिक लिप्सा, हिंसा और शोषण की राह पर चल रहा है। आसुरी प्रवृति से ग्रस्त राष्ट्र निर्बल राष्ट्रों पर अधिकार जमाने का प्रयास कर रहे हैं। वैश्वीकरण और उदारीकरण के नाम पर आर्थिक साम्राज्यवाद की स्थापना हो रही है। ऐसी स्थिति में स्वामी जी का हिन्दुत्व ही विश्व को सुरक्षा, सुख व शांति प्रदान कर सकता है। सम्पूर्ण जगत को प्रकाश दे सकता है। भारत में ही यह प्रकाश है। भारत का उठ खड़ा

होना विश्व की आवश्यकता है। हमारा आध्यात्म ही अमृत की शीतल वर्षा करके मानवता के सन्ताप का हरण कर सकता है।

सन्दर्भ पुस्तकेंः-

- स्वामी विवेकानंद का जीवन व संदेश
- स्वामी विवेकानंद भारतीय युवा शक्ति के नायक
- स्वामी विवेकानंद मेरा भारत अमर भारत